कीमत देकर बीज खरीदना पड़ता है और ऐसा बीज अप्रमाणित तथा पुराने होने से वे भारी मुसीबत में पड़ते हैं। राष्ट्रीय बीज निगम की निष्क्रियता के कारण इस वर्ष बड़ी संख्या में किसानों को समय पर बीज खास कर जूट बीज नहीं मिलने से जूट उत्पादक किसान केवल परेशान ही नहीं हुए भारी संख्या में वे धोखा-धड़ी के भी शिकार हुए। पुराने एवं अप्रमाणित अवांछित किस्म के बीज बोने के कारण या तो बीज अंकुरित ही नहीं हुए या फिर अवांछित एवं निकृष्ट किस्म के जूट होने के कारण ऐसे जूट फसलों को भी नष्ट करने पर खर्च करना पड़ा।

अतः गत वर्ष जूट उत्पादक किसानों को जूट बीज की आपूर्ति में जो विलम्ब एवं धांधली की गई। यही नहीं अन्य फसलों के भारी उपज देने वाली (हाईझेल्ड) किस्म के बीज जैसे गेहूं, धान चना, मूंग की आपूर्ति में भी ऐसी धाँधली होती रही है। अतः अनुरोध है कि इसकी एक उच्च स्तरीय जांच कराई जाए। साथ ही भविष्य में समय पर प्रमाणित जूट एवं अन्य बीजों की आपूर्ति किसानों को ही इसकी व्यवस्था शीघ्र कराई जाए।

(viii) Need to set up a TV Centre at Almora or Pithoragarh

श्री हरीश रावत (अलमोड़ा) : देश की 70 प्रतिशत जनता को दूरदर्शन का लाभ प्राप्त हो सके, इस हेतु शासन द्वारा दूरदर्शन जाल के विस्तार हेतु घोषित योजना स्वागत योग्य एवं स्तुत्य है।

मसूरी-देहरादून-लखनऊ से होने वाले टेलीविजन प्रसारण में पहाड़ों से अवरोध पैदा होने के कारण अल्मोड़ा एवं पिथौरागढ़, जो कि सीमान्त जनपद हैं, वहां टेलीविजन दृष्टव्य साफ नहीं आता है। इस क्षेत्र के टेलीविजन उपभोक्ता लम्बे समय से पिथौरागढ़ या अल्मोड़ा में टेलीविजन सेन्टर खोलने की मांग करते आ रहे हैं। मैंने स्वयं इस मामले को कई बार इस सम्मानित सदन में उठाया है। इन क्षेत्रों में टेलीविजन दृष्टव्य साफ न आने की बात को स्वीकार करते हुए तत्कालीन सूचना एवं प्रसारण मंत्री जी ने भविष्य में इस क्षेत्र को प्राथमिकता देने की बात को सदन में स्वीकार भी किया है।

इस कठिनाई व दूरदर्शन के महत्व को देखते हुए पिथौरागढ़ शहर में चंडाक नामक स्थान या अल्मोड़ा में चितई धार के पास टेलीविज़न ट्रान्समिशन सेन्टर खोला जाना चाहिए। मैं इस सन्दर्भ में यह भी उल्लेख करना चाहूंगा कि स्वयं सूचना एवं प्रसारण राज्य मंत्री जी ने कहा है कि नये ट्रांस्मीशन सेंटर सीमान्त क्षेत्रों में खोले जायेंगे। पिथौरागढ़ जनपद की सीमायें चीन व नैपाल से लगती हैं। चीन के सीक्यांग प्रान्त से होने वाला प्रसारण यहां सरलता से देखा जा सकता है। तिब्बत में फूलनचू नामक शहर में भी एक टेलीविजन रले सेन्टर खुलने जा रहा है। जहाँ से सरलता के साथ इन जनपदों कीं भोली-भाली जनता को प्रभावित किया जा सकता है।

नैनीताल या पौड़ी में ट्रान्समिशन सेन्टर खोलने से इन क्षेत्रों को फायदा नहीं पहुंच सकता है। अतः इन तथ्यों के आधार पर ट्रांसमिशन सेन्टर खोलने के मामले में पिथौरागढ़ को सर्वोच्च प्राथमिकता मिलनी चाहिये।

(ix) Renovating the Maha Bodhi temple

श्रीमती माधुरी सिंह (पूर्णिया) : बिहार भारत का प्रमुख राज्य है। प्राचीन बिहार का इतिहास वेदों, पुराणों और महाकाव्यों पर

(श्रीमती माधुरी सिंह)

आधारित है और देश के स्वाधीनता संग्राम में भी बिहार ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । इस राज्य में अत्यन्त भव्य मन्दिर, मस्जिदें, दरगाहें, गुरुद्वारे, और अन्य धर्म स्थान मौजूद हैं जो सदैव राष्ट्रीय एकता को प्रेरित करते रहते हैं । बौधगया में स्थिति महाबोधी मन्दिर भवन कला, संस्कृति की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान हैं । यहां भगवान बुद्ध की मूर्ति कला का उत्कृष्ट नमूना है । बौध गया में बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त किया था । यह गया नगर से लगभग 11 किलोमीटर दूर है । बुद्ध ने जिस वृक्ष के नीचे बैठ कर तपस्या की थी और ज्ञान का आलोक प्राप्त किया था वह बौधी वृक्ष के नाम से विख्यात है और इसी पवित्र स्थान पर महाबौधी मन्दिर स्थित है । इस मन्दिर के भीतर बुद्ध की स्वर्ण-मंडित प्रतिभा है । यह हमारे देश में सबसे पुराना स्मारक है । पुरातत्व की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है । लेकिन समय के थोड़े समुचित रख-रखाव और मरम्मत के अभाव में यह मन्दिर जीर्ण-शीर्ण हो रहा है । इस का गुम्बद कमजोर हो गया है । वह हिलने लगा है और उसके गिरने की आशंका पैदा हो गई है । इतिहास प्रेमी, रिसर्च स्कालर, देशी और विदेशी पर्यटकों के लिए आकर्षक महाबोधी मन्दिर को सुदृढ़ बनाने उसके समीपवर्ती वातावरण को सौन्दर्य प्रदान करने की ओर केन्द्रीय शिक्षा और संस्कृति मंत्रालय को तुरन्त ध्यान देना चाहिए । हमारे देश की इस अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा करना केन्द्र सरकार का कर्तव्य है । मैं यह अनुरोध करती हूं कि भारत सरकार वहां विशेषज्ञों का दल भेजें, उदारतापूर्वक आर्थिक अनुदान की मंजूरी दें । और इस कार्य को शीघ्र पूरा करें ।

(x) *Madhya Pradesh High Court Bench at Bhopal*

DR. SHANKAR DAYAL SHARMA (Bhopal) : Under Rule 377, I make the following statement :

Bhopal is the capital of the largest state of India with a population of more than seven lakhs. It will be in the fitness of things to have a bench of the High Court in Bhopal so that the common man may be able to get justice without undue expenses and inconvenience. Bhopal was the seat of the High Court and the Judicial Commissioners Court for a very long time. There are suitable buildings for the High Court in Bhopal. On states reorganisation, it was agreed that as Bhopal was to be the capital of the new large state of Madhya Pradesh, the seat of the High Court may be established at Jabalpur and the establishment of a Bench at Bhopal was not insisted upon for the time being.

Now the population of Bhopal has grown more than five times and is likely to grow further.

It is always desirable to have at least a bench of the High Court in the capital of a State so that the common man may have easy and speedy access to the judicial remedies against any improper action by the administration, as provided by our Constitution through writs and other remedies.

It is therefore required that the Minister for Law may take early steps for establishing a Bench of the High Court in Bhopal

17.00 hrs.

(xi) *Need to provide a stoppage of Vikramshila and Sonbhadra express trains at Mirzapur.*

SHRI UMA KANT MISHRA (Mirzapur) : Sir, Mirzapur is very important railway station for the following reasons :

(i) The famous temples of Goddess Vindhyachal, Astbhuja and Kalikhok are very close to Mirzapur. A large number of pilgrims visit to these temples every day from remote places of the country.